सामाजिक विज्ञान

Class 9th

(अर्थशास्त्र)

अध्याय 2: संसाधन के रूप में लोग

To get notes visit our website

mukutclasses.in

अभ्यास के प्रश्न

प्रश्न 1. ' संसाधन के रूप में लोग' से आप क्या समझते हैं?
उत्तर: संसाधन के रूप मे लोग से अभिप्राय देश की मानव पूंजी से है जो कुशलता और क्षमता से भौतिक पूंजी का निर्माण करते हैं। संसाधन के रूप मे लोग सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GDP) के सृजन मे योगदान देते है। इन्हें मानव संसाधन भी कहते हैं।

प्रश्न 2. मानव संसाधन भूमि और भौतिक पूँजी जैसे अन्य संसाधनों से कैसे भिन्न है ?
उत्तर: मानव संसाधन बाकी सभी पूंजी जैसे भूमि और भौतिक पूंजी से श्रेष्ठ है। क्योंकि मानव संसाधन भूमि और भौतिक पूंजी का उपयोग कर सकता है। वे अपने आप उपयोगी नहीं हो सकती। मानव को शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण के द्वारा अनेक संसाधनों का निर्माण करता है।

प्रश्न 3. मानव पूँजी निर्माण में शिक्षा की क्या भूमिका है?
उत्तर:
1. शिक्षा मानव को दायित्व से परिसंपत्ति के रूप में बदलती है।
2. शिक्षा से मानव भौतिक संसाधनों के निर्माण की योग्यता प्राप्त करता है।
3. प्रशिक्षित मानव देश की उत्पादन क्षमता में वृद्धि ला सकता है।
4. शिक्षा मनुष्य को विवकेशील तथा तर्कशील बनाती है ।
5. शिक्षा से मनुष्य प्रौद्योगिकी अनुसंधान कर सकते हैं।

प्रश्न 4. मानव पूँजी निर्माण में स्वास्थ्य की क्या भूमिका है?
उत्तर: मानव पूंजी निर्माण में स्वास्थ्य की भूमिका निम्नलिखित है।
1. स्वस्थ मानव अधिक उत्पादन क्षमता रखता है।
2. अस्वस्थ व्यक्ति देश की अर्थव्यवस्था के लिए दायित्व बन जाता है।
3. स्वस्थ मानव भूमि व अन्य भौतिक पूंजी को उपयोगी बना सकते हैं।
4 स्वस्थ व्यक्ति ही शिक्षण प्रशिक्षण में रूचि रखते हैं।

प्रश्न 5. किसी व्यक्ति के कामयाब जीवन में स्वास्थ्य की क्या भूमिका है?
उत्तर: शारीरिक रूप से हष्ट-पुष्ट और स्वस्थ व्यक्ति को बार बार डाक्टर के पास जाने की आवश्यकता नहीं होती है।
वह अपना ध्यान शिक्षा में लगा पाता है। अस्वस्थ व्यक्ति परिवार और देश के लिए दायित्व बन कर रह जाता है। परन्तु स्वस्थ व्यक्ति परिवार और देश के लिए परिसंपत्ति बन जाता है।

प्रश्न 6. प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रकों में किस तरह की विभिन्न आर्थिक क्रियाएँ संचालित की जाती हैं ?
उत्तर: आर्थिक क्रियाओं के आधार पर अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रकों में विभाजित किया गया है- प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक। इन क्षेत्रकों में निम्नलिखित आर्थिक क्रियाएँ संचालित की जाती है।
(i) प्राथमिक क्षेत्रक : प्राथमिक क्षेत्रक में उत्पादन क्रिया आती है। जैसे - कृषि, खनन, मछली पालन आदि।
(ii) द्वितीयक क्षेत्रकः द्वितीयक क्षेत्रक में विनिर्माण क्रिया आती है। जैसे- वस्त्र उद्योग, मोटर निर्माण आदि।
(iii) तृतीयक क्षेत्रक : तृतीयक क्षेत्रक में सेवा आती है। जैसे- शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार, बैंकिंग, बीमा आदि।

प्रश्न 7. आर्थिक और गैर-आर्थिक क्रियाओं में क्या अंतर है?
उत्तर: आर्थिक और गैर-आर्थिक क्रियाओं में निम्नलिखित अंतर है :-

आर्थिक क्रियाएँ	गैर-आर्थिक क्रियाएँ
1. इन क्रियाकलापों के द्वारा वस्तु और सेवाओं का उत्पादन होता है। 2. इनसे राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। 3. जैसे- खनन, कृषि, विनिर्माण, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि।	1. गैर आर्थिक क्रियाओं में वस्तु और सेवाओं उत्पादन नहीं होता। 2. इनसे राष्ट्रीय आय में वृद्धि नहीं होती है। 3. जैसे- खाना पकाना, घर की सफाई करना आदि।

प्रश्न 8. महिलाएँ क्यों निम्न वेतन वाले कार्यों में नियोजित होती हैं?
उत्तर: अधिकांश महिलाएँ घर का करती है जिनका उन्हें भूगतान नहीं किया जाता है। अधिकांश महिलाओं के पास बहुत कम शिक्षा और निम्न कौशल स्तर हैं। पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को कम पारिश्रमिक दिया जाता है। अधिकतर महिलाएँ वहाँ काम करती हैं, जहाँ नौकरी की सुरक्षा नहीं होती तथा कानूनी सुरक्षा का अभाव है।

प्रश्न 9. 'बेरोज़गारी' शब्द की आप कैसे व्याख्या करेंगे?
उत्तर: प्रचलित मजदूरी की दर पर काम करने के इच्छुक लोगों रोजगार नही मिल पाता तो उसे बेरोजगारी कहेंगे।

प्रश्न 10. प्रच्छन्न और मौसमी बेरोज़गारी में क्या अंतर है?
उत्तर: प्रच्छन्न बेरोजगारी में लोग काम लगे रहते हैं परंतु वास्तव में वे उत्पादन या सेवाओं में बढ़ोतरी नहीं कर रहे होते हैं। उदाहरण के लिए किसी कृषि कार्य में चार लोगों की आवश्यकता है परंतु परिवार के 6 लोग काम कर रहे हैं। इससे कृषि की उत्पादकता में कोई वृद्धि नहीं हो रही है। यानी दो व्यक्ति के काम न करने पर भी कृषि के उत्पादन में कोई बदलाव नहीं होगा। इसे प्रच्छन्न बेरोजगारी कहेंगे।
मौसमी बेरोजगारी तब होती है जब लोग वर्ष के कुछ महीनो में रोजगार प्राप्त नही कर पाते । कृषि पर आश्रित लोग प्रायः इस तरह की समस्या से जूझते है। जब बुआई कटाई निराई आदि होती है तभी उन्हें रोजगार मिलता है। वर्ष के बाकी समय में उन्हें काम नहीं मिलता है। इसे मौसमी बेरोजगारी कहते है।

प्रश्न 11. शिक्षित बेरोज़गारी भारत के लिए एक विशेष समस्या क्यों है?
उत्तर: भारत में मैट्रिक, स्नातक, स्नातकोत्तर डिग्रीधारी अनेक युवक रोजगार पाने में असमर्थ है। उन्हें अपनी योग्यतानुसार काम नहीं मिल रहा है। यह एक बहुत बड़ी समस्या बनती जा रही है। जो जनशक्ति अर्थव्यवस्था के लिए परिसंपत्ति बन सकते हैं वह बेरोजगारी के कारण दायित्व बन गए हैं। इससे अर्थव्यवस्था पर आर्थिक बोझ में वृद्धि हो रही है

प्रश्न 12. आप के विचार से भारत किस क्षेत्रक में रोज़गार के सर्वाधिक अवसर सृजित कर सकता है ?
उत्तर: भारत सेवा क्षेत्रक में सर्वाधिक रोजगार सृजन कर सकता है इसमें अपार संभावनाएं हैं।

प्रश्न 13. क्या आप शिक्षा प्रणाली में शिक्षित बेरोजगारों की समस्या दूर करने के लिए कुछ उपाय सुझा सकते हैं?
उत्तर: शिक्षित बेरोजगारों की समस्या को दूर करने के लिए शिक्षा प्रणाली में बहुत से बदलावों की आवश्यकता है। इस प्रकार है-

1. शिक्षा में कौशल विकास पर जोर देना चाहिए।

2. छात्रों में व्यवसायिक रूचि पैदा करनी चाहिए।
3. छात्रों को तकनीकी शिक्षा प्रदान की जानी आवश्यक है।
4. छात्रों को ने रोजगार सृजन करने के योग्य बनाना चाहिए।

प्रश्न 14. क्या आप कुछ ऐसे गाँवों की कल्पना कर सकते हैं जहाँ पहले रोज़गार का कोई अवसर नहीं था, लेकिन बाद में बहुतायत में हो गया?
उत्तर: हां, मैं एक ऐसे गांव के बारे में सोच सकता हूं जहां बाद बहुत सारे रोजगार पैदा हो गये। पहले उस गांव में कृषि योग्य भूमि बहुत कम थी। सिंचाई के कोई साधन नहीं थे। पूरी खेती बारिश पर निर्भर थी। अन्य कृषि कार्य जैसे मछली-पालन, मुर्गा-पालन, डेयरी आदि नहीं थे। ज्यादातर लोग निर्वाह खेती करते थे। परंतु शिक्षा के साथ-साथ उस गांव में रोजगार के नए नए साधन उपलब्ध होने लगे। मशीनों के द्वारा बंजर भूमि को भी कृषि योग्य बनाया गया। सिंचाई के लिए नलकूपों का प्रयोग किया जाने लगा। कृषि के अलावा डेयरी, मुर्गी-पालन, मछली-पालन आदि व्यवसाय में भी लोग रुचि लेने लगे। छोटे-छोटे हथकरघा उद्योग भी स्थापित हो गए। गांव में अस्पताल, स्कूल खुल गए। बहुत से बैंकों ने अपनी शाखाएं खोली। लोगों को ऋण उपलब्ध होने लगे। इससे लोग व्यापार करने लगे और रोजगार के नए नए अवसर पैदा होने लगे।

प्रश्न 15. किस पूँजी को आप सबसे अच्छा मानते हैं-भूमि, श्रम, भौतिक पूँजी और मानव पूँजी ? क्यों ?
उत्तर: मानव पूंजी बाकी सभी पूंजी जैसे भूमि और भौतिक पूंजी से श्रेष्ठ है। क्योंकि मानव संसाधन भूमि और भौतिक पूंजी का उपयोग कर सकता है। भूमि और भौतिक पूंजी अपने आप उपयोगी नहीं हो सकती। मानव को शिक्षा, स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी और प्रशिक्षण के द्वारा अनेक संसाधनों का निर्माण करता है।

MUKUTclasses